हिन्दी का शिक्षण शास्त्र-I [F-8]

इकाई-I : प्राथमिक स्तर पर हिन्दी : प्रकृति एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य

* बच्चों की दुनिया में हिन्दी

बिहार एक ऐसा हिन्दी प्रदेश है, जिसमें अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती हैं। यहाँ मैथली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, बज्जिका जैसी अनेकों भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। बच्चे इन क्षेत्रीय भाषाओं के परिवेश में ही जन्म लेते हैं। उनका आरंभिक पालन-पोषण यही होता है। बच्चे यह भाषा मातृभाषा के रूप में अर्जित करते हैं। मातृभाषा से यह यात्रा हिन्दी की ओर बढ़ती है। सामान्यतः बच्चे घर पर मातृभाषा का ही प्रयोग करते हैं। लेकिन विद्यालय का अपना एक मानक भाषा होता है, यहाँ हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। बच्चों का विद्यालय जाने के बाद मातृभाषा की यात्रा हिन्दी की ओर बढ़ती है। मातृभाषा की मदद से बच्चे हिन्दी आसानी से सीख जाते हैं। विद्यालय में शिक्षकों द्वारा हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है, और बच्चे इसे आसानी से समझ भी लेते हैं। क्योंकि मातृभाषा और हिन्दी भाषा में थोड़ा-सा का ही फर्क होता है। और धीरे-धीरे उन्हें हिन्दी भाषा के अनेक कौशलों से रूबरू कराया जाता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

* हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्राथमिक स्तर की हिन्दी की समझ

हिन्दी एक भाषा है, भाषा शब्द संस्कृत की 'भाषू' धातु से निर्मित है। जिसका अर्थ है 'बोलना'। भाषा मनुष्य के मुख से निकली हुई वह सार्थक ध्वनियाँ है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते है। हम अपने बातों को बोलकर या लिखकर पहुँचा सकते है और सुनकर या पढ़कर ग्रहण कर सकते है।

मानव स्वभाव की तरह हिन्दी भाषा का भी स्वभाव होता है। हिन्दी की प्रकृति निम्नलिखित है -

i) सामाजिकता - भाषा के लिए समाज का होना जरूरी है। बिना समाज के भाषा की कल्पना नही की जा सकती है।

ii) अर्जनीय - बच्चे अपने माता-पिता, घर परिवार द्वारा सुनते-सुनते खुद ही इसे ग्रहण कर लेते है।

iii) परिवर्तनशीलता - भाषा निरंतर परिवर्तनशील होते है। समय के साथ इसमें बदलाव आते रहते है।

iv) गतिशीलता - भाषा का कोई अंतिम रूप नही है। यह सदा गतिमान रहकर विकास करती है।

v)

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Date ___/___/___
Page ________

मातृभाषा - माँ के द्वारा सीखी गई हुई भाषा मातृभाषा कहलाती है। माँ के न होने पर घर-परिवार, आस-पड़ोस द्वारा स्वत: ही सीखी गई हुई भाषा मातृभाषा कहलाती है।

मातृभाषा शिक्षण का उद्देश्य - इस माध्यम से बच्चे अपने विचारों को सुगमता और सुलभता से व्यक्त कर पाते हैं।

हिन्दी शिक्षण का समान्य उद्देश्य -
- बच्चे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना सीख जाते हैं।
- इस भाषा के द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने का निपुणता प्राप्त कर लेते हैं।

हिन्दी भाषा का विशिष्ट उद्देश्य -
- ध्वनि वर्ण, उच्चारण, शब्द और वाक्यों का ज्ञान हो जाता है।
- सामान्य व्याकरण का प्रयोग करना सीख जाते हैं।
- शुद्ध-शुद्ध पढ़ना, लिखना, बोलना सीख जाते हैं।
- तथ्यों, घटनाओं, कहानी, कविताओं का ज्ञान हो जाता है।
- अपने विचारों को अभिव्यक्त करना जान जाते हैं।
- किसी भी बात को पढ़कर, सुनकर उसका अर्थ ग्रहण कर लेते हैं।

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी की समझ
प्राथमिक स्तर पर बच्चा पहले बोलना सीखते है उसके बाद उन्हें वर्णों का ज्ञान दिया जाता है ~~जैसे~~ और उन्हें इसे लिखना सीखाया जाता है। वर्णों के बाद शब्द और शब्द के बाद वाक्य सीखाया जाता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चे धीरे-धीरे अपने स्तर

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

के बातों को पढ़कर या बोलकर समझने लगाते हैं। हालांकि वो पूरा अर्थ ग्राहण नही कर पाते हैं। व्याकरण के कुछ ही बातों को वो समझते हैं जैसे- लड़को के लिए पढ़ता है, और लड़कियों के लिए पढ़ती है। लेकिन यह भी वो बोलचाल की भाषा द्वारा सीखते हैं। व्याकरण की कुछ खास ज्ञान उन्हें होता नही है। हिन्दी लेखन की दो रूपों का समझ उनमें विकसित हो जाता है- पहला कविता और दूसरा कहानी।

* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 के आलोक में हिन्दी भाषा के उद्देश्यों को समझना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में ही यह सिफारिश की गई थी कि शिक्षा को विभिन्न अवस्थाओं में होने वाली कौशलों के साथ जोड़ा जाए, लेकिन ऐसा हुआ नही। शिक्षा सिर्फ पाठ्यपुस्तकों की परीक्षाओं तक सीमित रह गया। वर्ष 2000 में पाठ्यचर्या की रूपरेखा में समीक्षा के बाद भी इसमें कोई बदलाव नही हुए। लेकिन वर्तमान समीक्षा इसमें बदलाव लाने की कोशिश कर रही है। और नयी स्कूली शिक्षा को इस समय के आवश्यकताओं से जोड़ने का कोशिश कर रही है। इस प्रयास में अनेकों आयामों पर ध्यान रखा गया है-

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

NCERT → National Council of Educational Reasearch & Training
↳ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

SCERT → State Council of Educational Reasearch & Training

स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते है। हिन्दी भाषा शिक्षा के मुख्य बिंदु इस प्रकार है —

i) बच्चो में हिन्दी पढ़ने-लिखने का कौशलों का विकास करना
ii) वर्ण, ध्वनि, शब्द, वाक्य से परिचित करना
iii) हिन्दी भाषा का उचित प्रयोग करना सीखाना
iv) किसी भी लिखी हुई बातों को पढ़कर उसके अर्थ को समझने का विकास करना
v) हिन्दी सीखने के लिए समृद्ध व रुचिकर मौका देना
vi) घरेलू भाषा के प्रति उचित सम्मान रखना
vii) बच्चों से गलतियों हो तो उसे आराम से समझाना
viii) कहानी, कविता, नाटकों द्वारा हिन्दी का शिक्षा देना
ix) सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बालकेंद्रित गतिविधियों का अन्न आयोजन करना
x) विशिष्ट बच्चों के लिए ब्रेल एवं संकेत भाषा का प्रयोग करना

⇒ बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008
BCF (Bihar Curriculum Framework) 2008

BCF 2008 SCERT द्वारा प्रकाशित किया गया है। NCF 2005 के प्रकाशन के बाद SCERT को महसूस हुआ कि बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा में भी समयानुसार बदलाव होना चाहिए। अतः NCF 2005 के आधार पर BCF 2008 का निर्माण किया गया। बिहार में हिन्दी भाषा को प्रथम भाषा के रूप में पसंद किया जाता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा में भाषा शिक्षण के संदर्भ में निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की गई है :-

i) बिहार में अनेक भाषाओं का प्रयोग घरेलू भाषा की तरह किया जाता है, शिक्षकों को बच्चों को हिन्दी भाषा का ज्ञान इससे जोड़ के देना चाहिए।

ii) स्कूली भाषा पाठ्यचर्या का महत्वपूर्ण भाग होता है। यह संवाद, सम्प्रेषण के साथ-साथ अन्य विषयों की शिक्षा के लिए अनिवार्य है।

iii) भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है और यह हमें विरासत में मिलता है। लेकिन उसके ~~विशेष~~ विशेष पक्षों का विकास तथा अन्य भाषा को सतत प्रयास द्वारा ही ग्रहण किया जा सकता है।

iv) भाषा शिक्षण को सिर्फ साहित्य तक केंद्रित नहीं रखना चाहिए बल्कि यह अन्य विषय में रुचि बढ़ाने के लिए भी होना चाहिए।

v) पाठों का चयन और अध्यापन विधि में धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता का ध्यान रखना चाहिए।

शिक्षकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह विषय विभिन्न विषयों की अवधारणाओं का नींव रखती है तथा उन्हें बच्चों को सीखने वक्त उचित अवसर और सुविधाऐं देनी चाहिए।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

जैसे - शिक्षा के लक्ष्य, बच्चों के सामाजिक परिप्रेक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति, मानव विकास की प्रकृति और मनुष्य की सीखने की प्रकृति इत्यादि। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 का खासियत यह है कि यह लचीलापन तथा गुणवत्ता पर बल देती है।

मार्गदर्शक सिद्धांत

i) ज्ञान को स्कूल के बाहर के ज्ञान से जोड़ना,
ii) पढ़ाई को रटत प्रणाली से मुक्त करना और यह सुनिश्चित करना,
iii) बच्चों को ~~विकास~~ के चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए ताकि वो पाठ्यपुस्तक-केंद्रित बनकर न रह जाए,
iv) कक्षाकक्ष को गतिविधियों से जोड़ा जाए तथा परीक्षा में लचीलापन लाया जाए और
v) बच्चों के मन में राष्ट्रहित, तथा प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के प्रति सकारात्मक भावना जागृत करना।

⇒ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के आलोक में हिन्दी भाषा का उद्देश्य निम्नलिखित है-

भारत बहुभाषिक देश है। यहाँ अनेकों भाषा का प्रयोग किया जाता है। बहुभाषिकता को समस्या नहीं बल्कि संसाधन के रूप में लेना चाहिए। बच्चों को किसी भी भाषा की शिक्षा उनके मातृभाषा या घरेलु भाषा में देना चाहिए। क्योंकि इस भाषा द्वारा बच्चे अपने बातों को सहज और

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner